International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 856-858

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 856-858
www.allresearchjournal.com
Received: 20-06-2015
Accepted: 22-07-2015

डॉ० दर्शन पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence
डॉ० दर्शन पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

नागार्जुन के काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ

डॉ० दर्शन पाण्डेय

प्रस्तावना

जनकवि नागार्जुन आधुनिक युग की नव-चेतना के कवि माने जाते हैं, उन्होंने एक ओर वर्ग-संघर्ष से संत्रस्त लोगों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए इसके लिए उत्तरदायी व्यवस्था के विरुद्ध तीव्र आक्रोश प्रकट किया है, तो दूसरी ओर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की बहुसंख्यक जनता को अभावों, कष्टों एवं पीड़ाओं में लीन देखकर स्वदेशी शासकों के अनुचित कार्यों के प्रति प्रखर व्यंग बाणों की भी वर्षा की है। गरीबी और शोषण से पीड़ित समाज का चित्रण नागार्जुन के काव्य का मुख्य विषय रहा है, इसीलिए उन्हें सच्चे अर्थों में सामाजिक-कवि कहा जाता है। वे अपने संपूर्ण काव्य में जन-समाज की मुक्ति के लिए संघर्ष करते नजर आते हैं। समाज के शोषक रूपी भेड़ियों के सही रूप एवं चरित्र का पर्दाफाश नागार्जुन ने अपने काव्य में सशक्त एवं यथार्थ रूप में किया है। उन्होंने जिन चीजों को अपनी खुली आंखों से देखा है, वही उनके काव्य का आधार बनती चली गई हैं। इस अर्थ में नागार्जुन अपने समय के समाज से गहराई से जुड़े रहे हैं, उनकी कविता का मुख्य स्वर सामाजिक संघर्ष ही है। इन सामाजिक संघर्षों से जुड़कर उनकी कविता भी संघर्षशील समाज की कल्पना करती है और समाज से तादात्म्य स्थापित कर जनजीवन की कविता का रूप धारण कर लेती है।

नागार्जुन ने अपने युग में उत्पन्न सभी हलचलों, समस्याओं एवं परिस्थितियों का अध्ययन बड़ी गहनता एवं तीव्रता के साथ किया है, वे जानते थे कि किस प्रकार भारत का दलित-वर्ग अभाव की चक्की में पिस रहा है। किस तरह भारतीय कृषक तथा श्रमिक-वर्ग कठिनाइयों से जूझ रहा है। वैयक्तिक अभावों एवं सामाजिक कष्टों से पीड़ित, संत्रस्त जन-जीवन कवि के हृदय को बेचैन कर देता है। अपनी कविताओं के माध्यम से नागार्जुन ने समाज के विभिन्न वर्गों में व्याप्त शोषण और दमन को सशक्त वाणी दी है। इस वाणी में भी समाज के वर्गीय चरित्र को ही प्रकट नहीं करते अपितु उनके अंतर्विरोधों को भी जाहिर कर देते हैं। समाज के शोषण को उसके अंतर्विरोधों को प्रकट करने में व्यंग, आक्रोश, करुणा और प्रतिशोध की भावनाएं प्रखर रूप में प्रकट होती हैं। वैयक्तिक अभावों एवं सामाजिक कष्टों से पीड़ित एवं संत्रस्त जन-जीवन कवि के हृदय को बेचैन कर देता है। वह देखता है कि आज किस तरह मुखौटा लगाकर लोग जनता के साथ व्यवहार कर रहे हैं, नागार्जुन जी लिखते हैं-

> 'जमींदार हैं, साहूकार हैं, बनिया हैं, व्यापारी हैं,
> अंदर-अंदर विकट कसाई बाहर खद्दरधारी हैं।' – (नागार्जुन रचनावली)

उच्च वर्ग के शोषण से पिस रहे किसानों और मजदूरों के प्रति नागार्जुन की काव्य चेतना ने तादात्म्य स्थापित किया है। सामाजिक विडंबनाओं के चित्रण में उनसे किसी समझौते की उम्मीद नहीं की जा सकती। इस सिलसिले में उनकी भाषा भी जबरदस्त तल्ख़ हो जाती है। सामाजिक विडंबना, रूढ़ि- ग्रस्तता और शोषण का वे खुलकर चित्रण करते हैं, यथा-

> 'जी हाँ, पेकिंग ही रहते थे कल तक मेरे नाना
> जी हाँ, मैंने अपनी माता को अबके पहचाना।' (नागार्जुन रचनावली)

तात्पर्य है कि उनकी चिंतन प्रक्रिया अभिजात वर्ग की नहीं है, शोषित वर्ग की है। समाज में व्याप्त शोषण-वृत्ति एवं सामाजिक तथा धार्मिक कुरीतियों पर कुठाराघात इनके काव्य की प्रमुख विशेषता है। इन्होंने परम्पराओं, धार्मिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों, सामाजिक विषमताओं तथा राजनीतिक व्यवस्था पर करारे व्यंग्य किए हैं।

इनकी कविताओं के विषय कल्पना की ऊँची उड़ान के नहीं बल्कि अपने आस-पास के फैले यथार्थ और जनता के साथ जीवंत संपर्क से ग्रहीत हैं। समाज के शोषित और दलित वर्गों के दुख, उनकी अंतर्व्यथा और उनके शोषण को नागार्जुन ने सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। शोषण का शिकार चाहे भूमिहीन किसान हो या जनजातियाँ या मध्यवर्गीय समाज, कवि

इन सभी वर्गों के प्रति न केवल सहानुभूति रखता है बल्कि क्रियात्मक रूप से उनके पक्ष में सीना तान कर खड़ा भी होता है।

इस रूप में वे वर्ग-चेतना के कवि हैं और इसके बावजूद वे अंतर्मुखता के शिकार नहीं हुए। दलित-वर्ग का भारतीय सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण स्थान है, दलितों के दुख-दर्द की चिंता नागार्जुन के काव्य में अधिक मिलती है। व्यंग्यात्मक रूप से भूमिहीनों की किस्मत की बात भी उनके काव्य में दिखेगी, परंतु उन्हें भी लगता है कि क्रांति अभी दूर ही है, क्योंकि भारतीय सामाजिक संरचना कुछ इस तरह की है। इनकी अनेक कविताएँ हैं, इनमें दलितों और शोषितों का ऐसा रूप उभरकर आता है जो पूरी तरह उनका दुःख-दर्द जाहिर कर देता है-

बेतरतीब बालों का जंगल
झुर्रियों भरा कुंचित ललाट
खिचड़ी दाढ़ी का उजड़ा घोसला
कुछ नहीं होता, कुछ नहीं होता, होती तो बस आँखें आँखें।' (नागार्जुन रचनावली)

यह महज रूप वर्णन नहीं है, इसके पीछे सामाजिक अर्थव्यवस्था का एक सांकेतिक रूप प्राप्त होता है। श्रमजीवी वर्ग को नागार्जुन ने अपने काव्य में प्रमुख स्थान दिया है। इस वर्ग के प्रति कवि में खास चेतना है। व्यंग, आक्रोश और परोक्षतः शोषक वर्ग के प्रति एक गहरा विक्षोभ जनित भाव नागार्जुन के काव्य में मिलता है। 'घिन तो नहीं आती' कविता में श्रमिक वर्ग की दयनीय और व्यंग्यात्मक स्थिति उद्घाटित होती है,-

'दूध-सा धुला सारा लिबास है तुम्हारा
बैठना था पंखे के नीचे, अगले डिब्बे में
ये तो बस इसी तरह
लगाएंगे ठहाके, सुरती फाकेंगे
..... घिन तो नहीं आती है। (नागार्जुन रचनावली)

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नागार्जुन की कविताओं में भोगा हुआ सामाजिक यथार्थ है। इनके काव्य में एक विशेषता यह है उसमें समग्र समाज उभर कर आता है। जहां अंधविश्वास भी है, धार्मिक और राजनीतिक जड़ता भी है, शोषण और दमन के प्रति विद्रोह भी है तथा श्रमजीवी वर्ग के प्रति तादात्म्य का भाव भी है। उनकी महत्वपूर्ण कविता 'मंत्र' में उन्हें समुचित रुप से देखा जा सकता है, यहाँ परंपरा, लोक, राजनीति, धर्म, इतिहास, व्यक्ति, समाज, रूढि-ग्रस्तता सभी एक साथ एक स्थान पर एक पैनी और बेहद कठोर अभिव्यक्तियाँ प्राप्त करते हैं। 'मंत्र' आज की कटु विसंगतियों को उजागर करती है। यह विडंबनाओं का सामाजिक दस्तावेज है, इसमें साफ व्यंग्य लगता है-

ओ भैरो, भैरो, ओ बजरंग बली
ओ बंदूक का टोटा, पिस्तौल की नली
ओ डॉलर, ओ रूबल, ओ पाउंड
साउंड, ओ साउंड, ओ साउंड
ओम्, ओम्, ओम्।' (नागार्जुन रचनावली)

उत्पीड़ित वर्ग का चित्रण नागार्जुन की कविता में सर्वत्र है, उनमें स्वार्थ भावना लेशमात्र भी नहीं है। समाज का मैल मिटना चाहिए इसके लिए वह शर-शैय्या तक पर शयन के लिए तैयार हैं। आर्थिक-सामाजिक अभिशाप को देखकर कवि कितना व्याकुल है यह 'जयति जयति जय सर्वमंगला' कविता में देखा जा सकता है-

'बहुत दुखी हूँ बहुत विकल हूँ
मध्यवर्ग के सामाजिक अभिशापों का ही तो प्रतिफल हूँ'

नागार्जुन ने अपने काव्य में वैयक्तिक कष्टों एवं अभावों का चित्रण स्थान-स्थान पर किया है। कवि का विद्रोही स्वर जीवन की कठोरता एवं विषमता से परिपूर्ण होकर कहीं-कहीं तीव्र आक्रोश एवं उग्र क्रोध से कटु हो गया है और वह जीवन संघर्ष में अकेला ही जूझता हुआ दृष्टिगोचर होता है। इसी कारण वह कहता है-

'पैदा हुआ था मैं दीन-हीन अपठित किसी कृषक कुल में आ रहा हूं पीता अभाव की आसव ठेठ बचपन से' (नागार्जुन रचनावली)

कवि के अनुसार भले ही आज कृषकों, मजदूरों, निम्न तथा मध्यम वर्ग की कोई भी स्थिति हो, परंतु एक दिन उन्हें अपना राज्य अवश्य मिलेगा। सामाजिक पीड़ाओं से मुक्ति मिलेगी। वे मजदूर राज्य स्थापित करने के लिए जनता का आह्वान करते हैं, जिससे वर्ग-संघर्ष समाप्त हो जाएगा, किसान-मजदूर भी जमीन के मालिक बन जाएंगे तथा अभाव और बेकारी हट जाएगी-

''सेठ और जमीदारों को नहीं मिलेगी एक छदाम,
खेत खान दुकान मिलें सरकार करेगी दखल तमाम
खेत मजूरों और किसानों में ज़मीन बंट जाएगी,

नहीं किसी कामकर के सिर पर बेकारी मंडराएगी।' (नागार्जुन रचनावली)

नागार्जुन ने 'अकाल और उसके बाद' नामक कविता में सामाजिक- आर्थिक यथार्थ का जीवंत तथा बिम्बात्मक चित्रण किया है। कवि ने अकाल की भीषण स्थितियों का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है, किसी घर में अनाज ना होने से क्या स्थिति होती है? अकाल का प्रभाव घर के सदस्यों के साथ-साथ अन्य जीव-जंतुओं पर भी पड़ता है, इसका सहज एवं यथार्थ वर्णन नागार्जुन ने इस कविता के माध्यम से किया है-

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास।
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त,
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।
दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद,
धुआं उठा आंगन से ऊपर कई दिनों के बाद।
चमक उठी घर भर की आंखें कई दिनों के बाद,
कौवे ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।। (नागार्जुन रचनावली)

वे कहते हैं अकाल का समय है, अनाज तथा भोज्य पदार्थों की बेहद कमी है, घर में रहने वाले नर-नारियों तथा बच्चों की बात तो छोड़िए वहां का चूल्हा चक्की भी उदास है। घर में इतना भी अनाज नहीं की चक्की चल सके अथवा चूल्हा जल सके। घर में रहने वाली कानी कुत्तिया भी चूल्हे के पास सोती रही है कि शायद कहीं से अनाज आ जाए और उसे भी कुछ खाने को मिले, घर का वातावरण पूरी तरह से खराब था। घर की दीवारों पर कीड़े-मकोड़े तथा छिपकलियाँ घूमती रहीं, जैसे वह घर की पहरेदारी कर रही हों। अकाल के समय स्थिति इतनी दयनीय थी कि चूहों के पेट भरने के लिए भी अनाज नहीं था, जब अकाल के समाप्त होने पर घर में अनाज आया उसके बाद की दशा का भी उन्होंने वर्णन किया है। अकाल की छाया हटते ही घर में अन्न के दाने आए जिससे सारे घर में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। अकाल के दिनों में घर की स्थिति खराब थी किंतु अकाल के बाद घर में अनाज आया, घर का पूरा वातावरण बदल गया, उसके उपरांत खाना पकाने के लिए चूल्हा जलाया गया। घर के आंगन से धुआँ उठने लगा, जब घर में चूल्हा जल गया तो घर के सभी सदस्यों की आंखों में चमक आ गई। सब यह सोच कर खुश थे कि हमारे कष्ट दूर हो जाएंगे, घर में चूल्हे के जलने से मात्र मनुष्य ही खुश नहीं थे अपितु मनुष्येतर जीव-जंतु भी प्रसन्न थे। घर में कौआ भी पंख को फैलाकर अपनी प्रसन्नता को जता रहा है, वह भी सोच रहा है कि अब घर में कुछ खाने को बनेगा और उसे भी मिलेगा। इस प्रकार नागार्जुन ने इस कविता द्वारा देश में आए

अकाल का यथार्थ चित्रण करते हुए तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक यथार्थ का भी चित्रण किया है।

नागार्जुन प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि रहे हैं, उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से प्रगतिवादी काव्यधारा को एक नया मार्ग दिया है। विषय वस्तु,उद्देश्य और संवेदना की दृष्टि से वे मार्क्सवादी हैं । नागार्जुन सामाजिक यथार्थपरक कविताओं में नागार्जुन एक ऐसे तीखे व्यंग्य की सृष्टि करते हैं कि वह सीधे मर्म को चोट करती है। नागार्जुन की कविता सरलता और सहजता के गुण से परिपूर्ण है, उन्होंने 'तीन दिन और तीन रात' कविता के माध्यम से कर्फ्यू की यथार्थ स्थिति का चित्रण किया है। किस प्रकार कर्फ्यू आज जन-जीवन को प्रभावित करता है। 'कर्फ़्यू' जीवन की रोजमर्रा की जिंदगी को अस्त-व्यस्त कर देता है जब भी किसी छोटे या बड़े शहर में दंगे भड़कते हैं या कोई अप्रिय घटना घटित होती है तो सरकार और पुलिस के पास उसे रोकने का एक ही मार्ग होता है कि शहर में कर्फ्यू लगा दिया जाए। इस कविता के माध्यम से नागार्जुन ने पूर्णिया नामक शहर में लगे कर्फ्यू का वर्णन किया है-

'बस सर्विस बंद थी/ तीन दिन, तीन रात लगता था, जन- जन की/ हृदय गति बंद थी/ तीन दिन तीन रात

प्राचार्य, जिलाधीश, एस॰ पी॰/ रहे सब परेशान /तीन दिन तीन रात बस सर्विस बंद थी/ तीन दिन तीन रात/ गुम रही गतिहीन सड़कें/ तीन दिन, तीन रात पंक्तिबद्ध वृक्षों के/ दिल भला क्यों नहीं धड़के/ तीन दिन, तीन रात/ बस सर्विस बंद थी'

नागार्जुन कहते हैं कि पूर्णिया शहर में कर्फ्यू होने के कारण बस की सेवा आज बंद थी जो रोज बेरोकटोक सड़क पर दौड़ती थी और उसके साथ जनजीवन उसी रफ्तार से दौड़ता था, ऐसा लगता है कि आम आदमी की हृदय गति ही मंद पड़ गई हो। किसी भी व्यवसाय से संबंधित व्यक्ति चाहे वह स्कूल का प्राचार्य, न्यायधीश या पुलिस विभाग का अवसर सभी परेशान और हैरान थे। कर्फ़्यू की स्थिति केवल रोजमर्रा की जिंदगी को चलाने वाले लोगों को ही प्रभावित नहीं करती, इससे पूरा समाज प्रभावित होता है। इस कर्फ्यू से सड़कें आज गतिहीन हो गई हैं, जहां कल लोगों की भीड़ इधर से उधर जाती हुई दिखाई देती थी ऐसा लगता है मानो इन सड़कों पर कोई चलता ही ना हो। ऐसी स्थिति केवल आम आदमी की ही हो ऐसा नहीं बल्कि सड़कों के किनारे लगे वृक्षों के हृदय भी कांप रहे थे क्योंकि तीन दिन और तीन रातों से सड़क पर कोई दिखाई नहीं दे रहा था सभी घबराए अपने घरों में बैठे थे। इस कर्फ्यू से जहां सब परेशान थे वहीं रिक्शे और तांगे वालों की मौज आ गई वे सभी बसों के न चलने से सवारियों से दस गुना अधिक किराया वसूल रहे थे और वहीं कुछ ऐसे भी थे जिन्हे किसी से कुछ लेना-देना नहीं था शराब के नशे में धुत पड़े थे इन तीन दिन और तीन रातों ने पूरे शहर को अस्त-व्यस्त कर दिया था। अदालते जहां दिनभर इतनी व्यस्त रहती थी वहीं आज वकील और मुख्तार जो रोज सीधे मुंह बात नहीं करते थे आज सस्ते से सस्ते दामों पर काम करने को तैयार थे। यही हालत होटलों की थी जहां अन्य दिनों में दिन-रात भीड़ रहती थी आज वह वीरान पड़े थे, सड़कों पर सरकारी जीप और ट्रक ही दिखाई दे रहे थे जो गश्त लगा रहे थे। बसों के न चलने से बसों के मालिक अपना गुस्सा बस चालकों पर उतार रहे थे, बस के अड्डे जो संवेदनशील स्थान थे, इसलिए यहाँ फौज तैनात रही। इन तीन दिनों और तीन रातों में अफवाहों का बाजार गर्म रहा कोई कुछ कहता तो कोई कुछ सब एक दूसरे की बात को काट रहे थे। इस स्थिति से हुकूमत भी परेशान थी, हुकूमत की परेशानी से सभी बड़े अधिकारी भी चिंतित थे, क्योंकि उनके ऊपर स्थिति को सामान्य करने का दबाव था। नागार्जुन ने कर्फ्यू जैसी गंभीर समस्या को बड़े सहज ढंग से प्रस्तुत किया है कविता में कहीं भी जटिलता प्रतीत नहीं होती यही उनकी कविता की शक्ति है।

यहां नागार्जुन ने व्यवस्था एवं सत्ता के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है, उनकी यह कविता आजादी के बाद के भारत की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करती है। नागार्जुन एक सच्चे प्रगतिशील जनवादी कवि थे उनकी कविताओं में उनका भोगा हुआ जीवन दर्शन बोलता है नागार्जुन के जीवन दर्शन की विशेषता है उनका यथार्थपरक दृष्टिकोण डॉ॰ शिवकुमार मिश्र के अनुसार 'नागार्जुन की सारी कविता यथार्थ की ठोस भूमि पर आधारित है, वह कहीं भी कल्पना की अतिशयता में नहीं भटके हैं। समाज तथा जनता के सजग पहरूए की भाँति उनकी दृष्टि ने सामाजिक जीवन के प्रत्येक स्तर का स्पर्श करते हुए यथार्थ को मूर्तिमान किया है।' नागार्जुन का रचना संसार बहुत व्यापक और बहुआयामी है, वे विभिन्न संदर्भों से जुड़े हुए रचनाकार हैं, वास्तव में उन्होंने अपनी कविताओं में अपने युग के सच को प्रस्तुत किया है। नागार्जुन ऐसेरचनाकार हैं, जो अभाव में ही जन्मे हैं। पीड़ित वर्ग के कष्टों को इन्होंने स्वयं झेला है। निःसंदेह ऐसा ही व्यक्ति भारत की निम्नवर्गीय जनता का सच्चा सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व कर सकता है। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि नागार्जुन की कविता में जन-जीवन की आशा-आकांक्षा विद्यमान है, वह सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है, उसमें जन-चेतना के स्वर सर्वोपरि हैं, वह अभाव से पीड़ित एवं शोषण से त्रस्त जनजीवन की प्रतिनिधि रचना है, उसमें न्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध जन जागरण का भाव भरा हुआ है। कवि ने मजदूर, किसान, शिक्षक, व्यापारी, नेता, ज़मीदार आदि सभी पर दृष्टि डालते हुए समाज के यथार्थ जीवन का जीता जागता चित्र अंकित किया है और सामाजिक विषमता, असमानता का प्रभावशाली चित्रण करते हुए सच्चे जनकवि की भूमिका का निर्वाह किया है। यही कारण है कि नागार्जुन का काव्य आधुनिक भारतीय जीवन की यथार्थ भूमि पर स्थित है और वे जनवादी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनका सम्पूर्ण काव्य सामाजिक यथार्थ को उजागर करता है।

सहायक ग्रंथ

1 नागार्जुन रचनावली- राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2 आलोचना त्रैमासिक पत्रिका- अक्तूबर –दिसंबर २०११ अंक
3 प्रतिनिधि आधुनिक कवि- सं॰ चंद्र त्रिखा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
4 आधुनिक कवि- ओम प्रकाश शर्मा शास्त्री, डॉ॰ राम प्रकाश, आर्य बुक डिपो, दिल्ली
5 स्मारिका- अज्ञेय एवं नागार्जुन का जन्म शताब्दी वर्ष २०११, हंसराज कॉलेज, दिल्ली